अर्स दिल मोमिन कह्या, ठौर बड़ी कुसाद।
हक हादी रूहें माहें बसें, असल अर्स जो आद।। ६२ ।।

मोमिनों के दिल को श्री राजजी महाराज का अर्श कहा है। यह अर्श दिल बहुत विशाल है। इसमें हक हादी रूहें सब रहते हैं।

जेता मता हक का, सो सब अर्स में देख।
सो सब मोमिन दिल में, पाइए सब विवेक।। ६३ ।।

परमधाम में जितनी न्यामतें हैं, उनको सब मोमिनों के दिल में देखो। परमधाम में देखो तब इसका ब्यौरा पता लगेगा।

हक हादी रूहें खेलैं, उठें बैठें दौड़ें करें चाल।
ए जानें अरवाहें अर्स की, जो रेहेत हमेसा नाल।। ६४ ।।

श्री राजश्यामाजी और रूहें अर्श में खेलते, उठते, बैठते और चलते हैं। परमधाम की जो रूहें हैं, वह सदा श्री राजश्यामाजी के साथ रहती हैं।

जो तोहे कहे हक हुकम, सो तूं देख महामत।
और कहो रूहन को, जो तेरे तन वाहेदत।। ६५ ।।

श्री महामतिजी अपनी रूह से कहते हैं, जो तुझे श्री राजजी का हुकम कहे उस पर तू स्वयं चल। फिर जो रूहें अर्श की हैं उनको चलने को कहो। रहनी में आने को बताओ। वह तुम्हारे ही तन हैं।

।। प्रकरण ।। १९ ।। चौपाई ।। १०६४ ।।

हक मासूक का मुख सागर–मंगला चरण

हक इलम के जो आरिफ, मुख नूरजमाल खूबी चाहें।
चाहें चाहें फेर फेर चाहें, देख देख उड़ावें अरवाहें।। १ ।।

जिन रूहों को जागृत बुद्धि का ज्ञान हो गया है, वह सदा श्री राजजी महाराज के मुखारबिन्द की शोभा बार-बार देखना चाहते हैं और उसे देख-देखकर अपने तन को छोड़ देना चाहते हैं।

एही काम आसिकन का, हक इलम एही काम।
नूरजमाल का जमाल, छोड़ें न आठों जाम।। २ ।।

श्री राजजी महाराज के आशिक रूहों का और उनके इलम का एक यही काम है कि नूरजमाल श्री राजजी महाराज के मुखारबिन्द से रात-दिन कभी जुदा न हों।

खाते पीते उठते बैठते, सोवत सुपन जाग्रत।
दम न छोड़ें मासूक को, जाको होए हक निसबत।। ३ ।।

जो मोमिन श्री राजजी की अंगना हैं वह खाते-पीते-उठते-बैठते, सोते, स्वप्न में और जागृत अवस्था में श्री राजजी महाराज के स्वरूप को एक पल भी नहीं छोड़ते।

हक बरनन फेर फेर करें, फेर फेर एही बात।
एही अर्स रूहों खाना पीवना, एही वतन बिसात।। ४ ।।

यह मोमिन बार-बार श्री राजजी महाराज के स्वरूप की ही बातें करते हैं। परमधाम की रूहों का यही खाना-पीना और कुल खजाना है।

Nijanand App

जेती रूहें आसिक, रेहेत हक खूबी के माहें।
रूह को छोड़ के वजूद, कोई जाए न सके क्यांहे।।५ ।।

परमधाम की आशिक रूहें श्री राजजी महाराज की छबि में मग्न रहती हैं। रूहें मुखारबिन्द की छबि को छोड़कर और अंग को नहीं देखती हैं।

एही हक इलम को लछन, आसिकों एही लछन।
एही इलम इस्क के आरिफ, सोई अर्स रूह मोमिन।।६ ।।

श्री राजजी महाराज के इलम का भी यही लक्षण है जो आशिक का लक्षण है। जो इस इलम और इश्क के जानने वाले हैं वही अर्श के मोमिन हैं।

।। मंगला चरण सम्पूर्ण ।।

बरनन करो रे रूहजी, मासूक मुख सुन्दर।
कोमल सोभा अलेखे, खोल रूह के नैन अंदर।।७ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं, हे मेरी रूह! तू अपने माशूक श्री राजजी महाराज के मुखारबिन्द की शोभा का वर्णन कर, जिसकी कोमल और बेशुमार शोभा है। इसको रूह की अन्दर की नजर से देखो।

ललित लाल मुख सागर, कहूं अचरज के अदभूत।
क्यों कर आवे बानीय में, ए बका सूरत लाहूत।।८ ।।

श्री राजजी महाराज का मुख सुन्दर लाल सागर के समान दिखाई देता है। इसे संसार के शब्दों में बेमिसाल कहूं कि लाजवाब कहूं? यह अखण्ड परमधाम के स्वरूप की शोभा है जो कही नहीं जा सकती।

मुख गौर झरे कसूंबा, सोभा क्यों कहूं बड़ो विस्तार।
रंग कहूं के सलूकी, ए न आवे माहें सुमार।।९ ।।

गोरे मुख से लाल किरणें झलक रही हैं। इसकी शोभा कैसे कहूं? इसका बड़ा विस्तार है। मुखारबिन्द का रंग कहूं या सलूकी (सुघड़ता)। यह शोभा बेशुमार है।

कहूं सागर मुख जोत का, के कहूं मेहेर सागर।
के कहूं सागर कलाओं का, जुबां केहे न सके क्योंए कर।।१० ।।

श्री राजजी महाराज के मुख को नूर का सागर कहा जाए या मेहर का सागर कहा जाए? या फिर इलम का सागर कहूं? यहां की जबान वर्णन नहीं कर सकती।

मुख चौक कहूं के चकलाई, के सीतल सागर सुख।
के कहूं सागर रस का, जो नूरजमाल का मुख।।११ ।।

मुखारबिन्द के चौक (चेहरा-मोहरा) का वर्णन करूं या सुन्दरता का जो सागर के समान शीतल सुख देने वाला है या इसे रस के सागर की उपमा दूं।

के कहूं सागर तेज का, के कहूं सागर सरम।
के नूर सागर कहूं बिलंद, के चंचल गुन नरम।।१२ ।।

श्री राजजी महाराज के मुखारबिन्द को इश्क का सागर कहूं जो तेज और शर्म से भरपूर है, या इसे नूरसागर की उपमा दूं, जिसमें बेशुमार चंचलाई के गुण भरे हैं।

Nijanand App

कहूं सज्जनता के सनकूली, दोस्ती कहूं के प्यार।
जो जो देखूं नजर भर, सों सब सागर अपार।। १३ ।।

यदि मैं अपनी नजर भरकर देखती हूं तो श्री राजजी महाराज के मुखारबिन्द की सज्जनता, सनकूली, दोस्ती और प्यार के गुण सागर के समान दिखाई देते हैं।

सागर कहूं पाक साफ का, के कहूं आबदार।
हक मुख सागर क्यों कहूं, सब विध पूरन अपार।। १४ ।।

श्री राजजी महाराज के मुखारबिन्द को निर्मल उज्ज्वलता का सागर कहूं या चमकीला सागर कहूं? श्री राजजी महाराज का मुखारबिन्द सब गुणों से भरपूर है। ऐसे शोभा युक्त सागर (मुखारबिन्द) का कैसे वर्णन करूं?

मोमिन दिल कोमल कह्या, तो अर्स पाया खिताब।
तो दिल मोमिन रूह का, तिन कैसा होसी मुख आब।। १५ ।।

मोमिनों के दिल को नरम कहा है, इसलिए इनके दिल को श्री राजजी ने अपने अर्श का खिताब दिया तो जिस मोमिन के दिल में श्री राजजी महाराज की बैठक है, उस मोमिन के मुख का तेज कैसा होगा?

तिन रूह के नैन को, किन विध कहूं नूर तेज।
जो हक नैनों हिल मिल रहे, जाके अंग इस्क रेजा रेज।। १६ ।।

ऐसी रूह के नैनों के तेज का कैसे बयान करूं? जिसके नैन श्री राजजी के नैनों से मिल गए हैं और जिनके अंग-अंग में इश्क भरा है।

और हक कदम अति कोमल, पांउं तली जोत अतंत।
सो रहें रूह नैनों बीच में, सो क्या करे जुबां सिफत।। १७ ।।

श्री राजजी महाराज के चरणों की तली अति कोमल है और तेजोमयी है जो रूहों की नजर में बसी है, उसकी सिफत यहां की जबान से कैसे कहें?

केहेवत हुकम इन जुबां, पर ए खूबी कही न जाए।
ए कहे बिना भी ना बने, बिन कहें रूह बिलखाए।। १८ ।।

श्री राजजी महाराज का हुकम ही यहां की जबान से कहला रहा है। नहीं तो यह खूबी कही नहीं जा सकती। बिना कहे भी रहा नहीं जाता, क्योंकि रूहों को कष्ट होता है।

इन नैनों सुख बका न देख्या, सुन्या हादियों के मुख।
सुनी बानी जुबां केहे ना सके, जुबां कहे देख्या सुख।। १९ ।।

इन नैनों से अखण्ड सुख को देखा नहीं है। यह श्री राजश्यामाजी के मुखारबिन्द की कही बातें हैं और सुनी हुई बातों को जबान कह नहीं सकती। जबान तो जिस सुख को देखा होगा, उसे ही कहेगी।

कहूं नूर तेज रोसनी, याकी जोत गई अंबर लों चल।
माहें गुन गरभित कई सागर, क्यों कहे बिना अंतर बल।। २० ।।

श्री राजजी महाराज के मुख के नूर के तेज का वर्णन करूं, जिसकी जोत आकाश तक फैली है। जिसमें सागर के समान कई गुण भरे पड़े हैं, उनका वर्णन अन्दर की शक्ति के बिना कैसे कहें?

Nijanand App

किन विध कहूं मुख मांडनी, कहूं सनकूली के सुख पुंज।
के कहूं आनंद सागर पूरन, गरुआ गंभीर नूर गंज।। २१ ।।

श्री राजजी महाराज के मुखारबिन्द की शोभा का वर्णन कैसे करूं और मुखारबिन्द की सलूकी (सुघड़ता) की क्या कहूं जो सुख का सागर है। श्री राजजी महाराज का मुखारबिन्द आनन्द का गहरा, गम्भीर सागर जैसा दिखाई देता है।

ए सागर सरूपी मुख मासूक, कई खूबी खुसाली अनेक।
कई रंग तरंग किरने उठें, ए वेही जानें गिनती विवेक।। २२ ।।

माशूक श्री राजजी महाराज के मुखारबिन्द की शोभा सागर के समान है, जिनमें कई तरह की खूबियां और खुशालियां हैं। कई तरह के रंगों की तरंगें उठती हैं, जिसका ब्यौरा श्री राजजी ही जान सकते हैं।

इन मुख सागर में कई सागर, सुख आनंद अपार।
कई सागर सुख सलूकियां, माहें कई गंज अपार अंबार।। २३ ।।

श्री राजजी महाराज के सागर समान मुखारबिन्द में सुख और आनन्द के बेशुमार सागर भरे पड़े हैं और कई तरह की सागर के समान सुख देने वाली गंजान गंज सलूकियां भरी हैं।

कोई मोमिन केहेसी ए क्यों कह्या, हक मुख सोभा सागर।
सुच्छम सरूप अति कोमल, ललित किसोर सुन्दर।। २४ ।।

कोई मोमिन यह पूछे कि श्री राजजी महाराज के मुखारबिन्द को सागर की उपमा क्यों दी है? उनका स्वरूप सूक्ष्म, अति कोमल, लुभावना, किशोर अवस्था का सुन्दर है।

जो अरवा होए अर्स की, सो लीजो दिल धर।
सुच्छम सूरत सोभा बड़ी, सो सुनियो पड़उत्तर।। २५ ।।

जो परमधाम की रूहें हों वह इसको दिल में विचार कर लेना। श्री राजजी महाराज के सूक्ष्म स्वरूप की शोभा बहुत भारी है, इसीलिए अपने प्रश्न का उत्तर सुनो।

कह्या निमूना एक भांत का, अंग खूबी इस्क सागर।
खुसबोए नरम चकलाइयां, सब सागर कहे यों कर।। २६ ।।

श्री राजजी महाराज के अंग की खूबी और इश्क सागर के समान है। यह एक नमूने के लिए बताया है। इसके अन्दर खुशबू, नरमाई, चकलाइयां (लम्बाई-चौड़ाई) इतनी अधिक हैं कि उनको सभी सागर के समान बेशुमार कहते हैं।

जो रंग कहूं गौर का, तो सागर मेर तरंग।
जो कहूं लाल मुख अधुर, हुए सागर लाल सुरंग।। २७ ।।

यदि श्री राजजी महाराज के गोरेपन के रंग का वर्णन करती हूं तो उसकी तरंगें पहाड़ के समान दिखती हैं। इस तरह से श्री राजजी महाराज के मुखारबिन्द की तथा होंठों की लालिमा बताती हूं, तो चारों तरफ लाल रंग ही दिखाई देता है, इसलिए सागर की उपमा दी है।

Nijanand App

हक के मुख का नूर जो, सो नूरै सागर जान।
तेज जोत या सलूकियां, सोभा सागर भर्‌या आसमान।। २८ ।।

श्री राजजी महाराज के मुखारबिन्द का नूर इतना बेशुमार है कि इसे नूर का ही सागर समझो। मुख के तेज, जोत, सलूकियों की शोभा से आसमान भरा पड़ा है जो सागर के समान दिखाई देता है।

सोभा हक सूरत की, सागर भी कहे न जांए।
ए सोभा अति बड़ी है, पर सो आवे नहीं जुबांए।। २९ ।।

श्री राजजी महाराज की शोभा सागर के समान भी नहीं कही जाती। यह तो सागर से भी बहुत बड़ी है जो जबान से वर्णन करने में नहीं आती।

सागर कहे यों जान के, कहे दुनियां में बड़े ए।
पड़्या सागर से ना निकसे, कही अंग सोभा इन वास्ते।। ३० ।।

मैंने जानकर यह उपमा दी है, क्योंकि सागर ही दुनियां में सबसे बड़ा है। जैसे सागर में से कोई निकल नहीं पाता, वैसे ही श्री राजजी महाराज के अंग की शोभा से कोई निकल नहीं सकता। जहां देखते हैं वहीं अटक जाते हैं।

यों लग्या आसिक एक अंग को, सो तहां हीं हुआ गलतान।
इनसें कबूं ना निकसे, तो कहे सागर अंग सुभान।। ३१ ।।

आशिक रूहें जिस किसी एक अंग को देख लेती हैं, वहीं गलितगात हो जाती हैं। फिर कभी वहां से निकल नहीं सकती, इसलिए श्री राजजी महाराज के अंग को सागर कहा है।

ए रस रंग उपले केते कहूं, कई विध जिनस जुगत।
फेर फेर देख देख देखहीं, रूह क्योंए न होए तृपित।। ३२ ।।

श्री राजजी महाराज के मुखारबिन्द के ऊपर कई तरह के रस, रंग और सब खूबियां दिखाई देती हैं, जिसे रूहें बार-बार देखती हैं फिर भी तृप्त नहीं होतीं।

सेहेज अन्दर के पाइए, मुख देखे हक सूरत।
रस बस एक हो रहीं, जो रूहें माहें खिलवत।। ३३ ।।

यदि श्री राजजी महाराज के मुखारबिन्द को देखें तो उनके अन्दर के सहज स्वभाव की पहचान होती है। मूल-मिलावा में बैठी रूहें श्री राजजी महाराज के आनन्द में एक रस होकर बैठी हैं।

जो गुन हक के दिल में, सो मुख में देखाई देत।
सो देखें अरवाहें अर्स की, जो इत हुई होए सावचेत।। ३४ ।।

श्री राजजी महाराज के दिल में जो गुण हैं, वह सब उनके मुखारबिन्द पर दिखाई देते हैं। परमधाम की रूहें जिन्हें यहां जागृत बुद्धि का ज्ञान मिल गया है, वह इन गुणों को देख सकती हैं।

मुख बोले पीछे पाइए, जो दिल अन्दर के गुन।
पर मुख देखे पाया चाहे, जो अन्दर गुझ रोसन।। ३५ ।।

श्री राजजी महाराज के दिल के अन्दर कितने गुण भरे पड़े हैं जो मुख से बोलने के बाद ही पता चलते हैं, परन्तु मेरी रूह श्री राजजी के बिना बोले श्री राजजी के दिल के अन्दर की बातें जानना चाहती है।

Nijanand App

जो गुन हिरदे अन्दर, सो मुख देखे जाने जांए।
ऊपर सागरता पूरन, ताथें दिल की सब देखाए।। ३६ ।।

श्री राजजी महाराज के दिल के अन्दर जितने गुण हैं वह मुखारबिन्द से ही देखे जा सकते हैं, क्योंकि मुखारबिन्द के ऊपर सभी दिल के गुण सागर के समान दिखाई देते हैं।

मुख मीठा सागर पूरन, मुख मीठा सागर बोल।
मेहेर सागर दृष्ट पूरन, लई इस्क सागर माहें खोल।। ३७ ।।

श्री राजजी महाराज का मीठा मुखारबिन्द और उनकी मीठी बोली सागर के समान भरपूर हैं। उनकी मेहर की नजर भी सागर के समान भरपूर है। इन सभी गुणों को इश्क के तन, ब्रह्मसृष्टि ने अपने दिल में ले लिया है।

यों गुन सागर केते कहूं जो देखत सुख के रंग।
कई सुख नेहेरें किरना चलें, कई सागर सुख तरंग।। ३८ ।।

इस तरह से श्री राजजी महाराज के अन्दर गुण, जो सागर के समान हैं, कैसे कहूं? इनके सुख वही जानते हैं जो देखते हैं। श्री राजजी महाराज के मुखारबिन्द से इस तरह कई तरह की सुख की नहरें और तरंगें चलती हैं।

कई रस रंग एक गौर में, एक रंग माहें कई रस।
क्यों बरनों आगे मोमिनों, ए मुख मासूक अजीम अर्स।। ३९ ।।

श्री राजजी महाराज के गोरेपन में कई तरह के रंग और आनन्द भरे पड़े हैं। एक रंग में कई-कई तरह के रसों का आनन्द मिलता है। परमधाम में विराजमान माशूक श्री राजजी महाराज के मुख की शोभा का वर्णन मोमिनों के आगे कैसे करूं?

एक सलूकी में कई चकलाइयां, एक चकलाइएं कई सलूक।
ए सरूप केहेते आगे मोमिन, दिल होत नहीं टूक टूक।। ४० ।।

मुखारबिन्द की बनावट में कई चकलाइयां हैं और एक चकलाई में कई सलूकियां हैं। ऐसे स्वरूप का वर्णन मोमिनों के आगे करने से दिल टुकड़े-टुकड़े क्यों नहीं हो जाता?

दोऊ तरफ सोभा कान भूखन, बीच नासिका सोभे दोऊ नैन।
तिलक निलाट अति उज्जल, दोऊ अधुर मधुर मुख बैन।। ४१ ।।

मुखारबिन्द के दोनों तरफ कानों में आभूषणों की शोभा है और उनके बीच नासिका तथा नासिका के दोनों तरफ नैनों की शोभा है। श्री राजजी के माथे पर तिलक बहुत सुन्दर दिखाई देता है तथा मुखारबिन्द के दोनों होंठों की बोली बड़ी मधुर लगती है।

सिर मुकट एक भांत का, क्यों कहूं जुबां रंग नंग।
ना देख सकों नूर नजरों, कई किरने उठें तरंग।। ४२ ।।

श्री राजजी महाराज के सिर पर एक विशेष तरह का मुकुट है। जिसके नगों के रंगों का वर्णन यहां की जबान से कैसे करूं? उसमें कई तरह की किरणें तथा तरंगें उठती हैं जिसके नूर को मैं अपनी नजर से नहीं देख सकती।

Nijanand App

केहे केहे जुबां एता कहे, जो जोत भरया अवकास।
आसमान जिमी भर पूरन, अब किन विध कहूं प्रकास।।४३।।

बार-बार कहने पर जबान से इतना ही कहा जा सकता है कि नगों की जोत आकाश में भरी है। आसमान, जमीन भी उनकी किरणों और तरंगों से भरपूर है। अब उनके प्रकाश की शोभा को कैसे कहें?

इन विध सोभा मुकट की, ए जुबां क्यों करे बरनन।
सिर सोभे नूरजमाल के, नीके देखें रूह मोमिन।।४४।।

मुकुट की ऐसी शोभा का वर्णन यहां की जबान कैसे करे, जो श्री राजजी के सिर पर शोभायमान है, इसको रूहें अच्छी तरह से देखती हैं।

ए नंग जवेर केहेत हों, सो सब्द सुपन जिमी ले।
ए अर्स जवेर भी क्यों कहिए, जो सिनगार हक बका के।।४५।।

मुकुट के एक नग या जवेर का वर्णन करती हूं। सब संसार की उपमा देकर परमधाम के जवेर का वर्णन कैसे कहा जाए जो श्री राजजी महाराज के अखण्ड सिनगार का ही रूप है।

होत जवेर पैदा जिमी से, नंग अर्स में इन विध नाहें।
जोत पूरन अंग ले खड़ी, रूह जैसी चाहे दिल माहें।।४६।।

एक जवेर जो जमीन से पैदा होता है। परमधाम में नगों में पैदा होने की हकीकत ही नहीं है। रूह जैसा चाहती है अंग की शोभा वैसी ही बन जाती है।

असल तन जिनों अर्स में, सो कर लीजो दिल विचार।
हक के सिर का मुकट, सो सोभा क्यों आवे माहें सुमार।।४७।।

जिनके नूरी तन परमधाम में हैं, वह इसको दिल से विचार कर लेना। श्री राजजी महाराज के मुकुट की शोभा बेशुमार होने से मैं कैसे कहूं?

यों ही है बीच अर्स के, जिनों जो सोभा प्यारी लगत।
हर रूह अर्स अजीम की, दिल माफक देखत।।४८।।

परमधाम की यही हकीकत है। जिसको जो शोभा अच्छी लगती है उस रूह के दिल की चाहना के अनुसार ही श्री राजजी महाराज का सिनगार दिखाई देने लगता है।

तुम इत भी माफक इस्क के, देखियो कर सहूर।
हिसाब न सोभा मुकट की, ए जुबां क्या करे मजकूर।।४९।।

हे मोमिनो! तुम इस संसार में भी अपने इश्क के अनुसार ही विचार करके देखना। वैसे श्री राजजी महाराज के मुकुट की शोभा बेहिसाब है। यहां की जबान उसे कैसे वर्णन करे?

हक सूरत सलूकी क्यों कहूं, महंमदें कही अमरद।
किसोर कही मसीय ने, सोभा कही न जाए माहें हद।।५०।।

श्री राजजी महाराज के स्वरूप की सलूकी कैसे कहूं? रसूल साहब ने भी इसे अमरद कहा है। श्यामा महारानी (श्री देवचन्द्रजी) ने इसे किशोर कह दिया है। ऐसे सुन्दर स्वरूप की शोभा इस हद के संसार में कही नहीं जा सकती।

Nijanand App

अति सुन्दर सूरत अर्स की, ताके क्यों कहूं वस्तर भूखन।
जामा पटुका इजार, माहें सिफत न आवे सुकन।।५१ ।।

श्री राजजी महाराज का परमधाम का स्वरूप अति सुन्दर है तो फिर उनके वस्त्र और आभूषणों का कैसे बयान करूं? जामा, पटुका, इजार में कई तरह की सिफत भरी पड़ी है, जिनको शब्दों में कहना सम्भव नहीं है।

केहे केहे मुख एता कहे, नूरै के वस्तर।
मैं केहेती हों बुध माफक, ज्यादा जुबां चले क्यों कर।।५२ ।।

मैं बार-बार अपनी बुद्धि से इतना ही कहती हूं कि वस्त्र नूर के हैं। इससे ज्यादा वर्णन मेरी जबान से नहीं हो सकता।

सोभा सलूकी मुख की, और सलूकी भूखन।
और सलूकी वस्तर की, ए जानें अरवा अर्स के तन।।५३ ।।

मुख की, वस्त्रों की तथा आभूषण की सलूकी की शोभा रूहें ही जानती हैं जिनके तन परमधाम में हैं।

रंग वस्तरों तो कहूं, जो दस बीस रंग होए।
इन सुपन जिमी जो वस्तर, तामें कई रंग देखत सोए।।५४ ।।

वस्त्रों के रंगों का वर्णन करना तभी सम्भव है यदि दस बीस रंग हों। सपने के संसार के वस्त्रों के भी कई रंग दिखाई देते हैं।

तो अर्स वस्तर क्यों रंग गिनों, और करके दिल अटकल।
बेसुमार ल्याऊं सुमार में, यों मने करत अकल।।५५ ।।

परमधाम के वस्त्रों के रंग दिल में अनुमान लगाकर कितने गिनें? मेरी बुद्धि मना भी करती है। फिर भी बेशुमार रंगों को शुमार में लाकर वर्णन करती हूं।

है बड़ी लड़ाई इन बात में, जब सहूर करत अर्स दिल।
रूह तो मेरी इत है नहीं, हुकम केहेवत ऊपर मजल।।५६ ।।

जब अपने अर्श दिल से विचार करती हूं तो सबसे बड़ा झगड़ा दिल में इस बात का होता है कि संसार में मेरी परआतम तो है नहीं। यह सब श्री राजजी का हुकम कहलवा रहा है।

जामा अंग को लग रह्या, हार दुगदुगी हैड़े पर।
ऊपर अति झीनी झलकत, जुड़ बैठी चादर।।५७ ।।

श्री राजजी महाराज का जामा अंग पर टाइट फिट है। उसी तरह से हार और दुगदुगी श्री राजजी महाराज के गले में छाती पर शोभा देते हैं। जिनके ऊपर बहुत बारीक चादर है जिसकी झलक शोभा देती है, जो गले में चिपकी है।

जामें ऊपर जो भूखन, जो कण्ठ पेहेरे हैं हार।
सो कई नंग जंग करत हैं, अवकास न माए झलकार।।५८ ।।

जामे के ऊपर जो आभूषण पहने हैं, गले में हार पहने हैं, उनके कई नगों की जोत आकाश में जगमग करती जंग कर रही है।

Nijanand App

याही जिनस बाजू बंध, और फुंदन लटकत।
ए सबे हैं एक रस, पर रंग कई विध जंग करत।।५९।।

यही हकीकत बाजूबन्ध और उनके लटकते फुंदनों की है। यह सब एक रस हैं, पर इनके रंगों की किरणें कई तरह से टकराती हैं।

हस्त कमल काड़ों कड़े, माहें कई रंग कई बल।
सो रूह लेवे विचार के, आगूं चले न जुबां अकल।।६०।।

हस्त कमल के कड़ों में कई तरह के घुमाव, रंग हैं जिनका वर्णन करने में यहां की अक्ल और जबान असमर्थ है। रूहों को स्वयं विचार करके अनुभव करना होगा।

याही विध हैं पोहोंचियां, तिनमें कई रंग नंग कंचन।
रंग गिनती केहेते सकुचों, जानों क्यों कहूं सुमार सुकन।।६१।।

इसी तरह से पोहोंची की शोभा है जिसमें कई तरह के रंगों के नग कंचन में जड़े हैं। रंगों की गिनती गिनने में संकोच लगता है, क्योंकि यह बेशुमार हैं। यहां के शब्दों से कहना सम्भव नहीं है।

किन विध कहूं हथेलियां, अति उज्जल रंग लाल।
केहेते लीकां दिल लरजत, ए अंग नूरजमाल।।६२।।

श्री राजजी महाराज की हथेलियों की हकीकत कैसे कहूं? उनका रंग उज्ज्वल और लाल है। उनकी रेखाएं वर्णन करने में दिल कांपता है, क्योंकि यह अंग श्री राजजी महाराज के हैं।

अंगुरियां हस्त कमल की, याको दिया न निमूना जाए।
वचन कहूं विचार के, तो भी रूह पीछे जाए पछताए।।६३।।

श्री राजजी महाराज की हाथ की उंगलियों का नमूना है ही नहीं। संसार में बैठकर विचारती हूं और झूठी उपमा देती हूं। यह लगती नहीं तो रूह पछताती है।

हर एक अंगुरी मुंदरी, हर मुंदरिएं कई रंग।
सो जोत भरत आकास को, कहूं किन विध कई तरंग।।६४।।

श्री राजजी महाराज की हर एक उंगली में मुंदरी है और हर मुंदरी में कई रंग हैं, जिनकी किरणें आकाश में भर गई हैं। अब उनकी तरंगों का वर्णन कैसे करें?

जो जोत नख अंगुरी, जुबां आगे चल न सकत।
फेर फेर वचन एही कहूं, अंबर जोत भरत।।६५।।

उंगली के नख की जोत का वर्णन के लिए यहां की जबान चलती नहीं। बार-बार यही बात कहनी पड़ती है कि जोत आकाश में भर रही है।

याही विध नख चरनों के, नख जोत एही सब्द।
एही खूबी फेर फेर कहूं, क्या करों छूटे न जुबां हद।।६६।।

इसी तरह से चरण कमलों के नाखून की हकीकत है, जिनकी जोत का वर्णन करने के लिए शब्द नहीं हैं। इस शोभा के लिए बार-बार यही कहना पड़ता है कि संसार की जबान से इसका वर्णन सम्भव नहीं है।

Nijanand App

कोमलता चरन अंगुरी, और चरन तली कोमल।
ए दिल रोसन देख के, हाए हाए खाक न होत जल बल।।६७।।

चरण कमलों की उंगली तथा चरणों की तली की कोमलता और तेज देखकर हाय! हाय! यह दिल जल बलकर खाक क्यों नहीं हो जाता?

चारों भूखन चरन के, माहें रंग जोत अपार।
दिल न लगे बिना गिनती, जानों क्यों ल्याऊं माहें सुमार।।६८।।

चरण कमलों के चारों आभूषण झांझरी, घुंघरी, काम्बी, कड़ला में रंगों की जोत बेशुमार है। उनका वर्णन करने में बिना गिनती दिल नहीं लगता है। कैसे इनको शुमार में लाकर रंगों का वर्णन कर दूं?

सुमार कहे भी ना बने, दिल में न आवे बिना सुमार।
ताथें मुस्किल दोऊ पड़ी, पड़या दिल माहें विचार।।६९।।

शुमार में भी लाने से कहा नहीं जाता, क्योंकि बिना शुमार के दिल में ही नहीं आते, इसलिए यह दोनों बातें दिल में विचार करने के लिए मुश्किल हो गई है।

चरन हक सूरत के, तिन अंगों के भूखन।
रूह लेसी सोभा विचार के, जाके होसी अर्स में तन।।७०।।

श्री राजजी महाराज के चरण कमल और उनके अंगों के आभूषणों की शोभा को रूहें विचारकर ग्रहण कर लेंगी, क्योंकि इनकी परआतम परमधाम में हैं।

याही वास्ते कहे सागर, सोभा न आवे माहें सुमार।
सागर सोभा भी ना लगे, सब्द में न आवे सोभा अपार।।७१।।

शोभा शुमार में न आने के कारण ही सागर की उपमा दी है। वैसे शोभा तो इतनी बेशुमार है कि सागर की उपमा भी नहीं लगती।

जो सोभा कही हक की, ऐसी हादी की जान।
हकें मासूक कह्या अपना, सो जाहेर लिख्या माहें फुरमान।।७२।।

जो शोभा श्री राजजी की बताई है ऐसी ही श्री श्यामाजी की समझ लो, जिनको कुरान में श्री राजजी महाराज ने अपना माशूक कहा है।

और सोभा जुगल किसोर की, रूह अल्ला ने कही इत।
उसी इलम से मैं केहेत हों, जो कहावत हुकम सिफत।।७३।।

श्री राजश्यामाजी की शोभा का वर्णन रूह अल्लाह (श्री देवचन्द्रजी) ने यहां किया है। इसी जागृत बुद्धि के ज्ञान से मैं वर्णन करती हूं, जिसे धनी का हुकम कहलवा रहा है।

गौर गाल सुन्दर हरवटी, फेर फेर देखों मुख लाल।
अर्स कर दिल मोमिन, माहें बैठे नूरजमाल।।७४।।

श्री राजजी महाराज के गोरे गाल, सुन्दर हरवटी (ठोड़ी) तथा लाल मुखारबिन्द को बार-बार देखती हूं। मेरे धनी श्री राजजी महाराज ऐसी सुन्दर शोभा से मेरे दिल में बैठे हैं।

Nijanand App

क्यों कहूं सागर चातुरी, कई सुख अलेखे उतपन।
कई पैदा होत एक सागरें, नए नए सुख नौतन।।७५ ।।

श्री राजजी महाराज की चतुराई रूपी सागर की शोभा का कैसे वर्णन करूं? जिसमें कई तरह के सुख बेशुमार मिलते हैं। मुखारबिन्द की शोभा के सागर से कई बेशुमार सुख पैदा होते हैं। एक ही सागर से नित्य ही नए नए सुख मिलते हैं।

हक मुख सब विध सागर, सुख अलेखे अपार।
ए सुख जानें निसबती, जिन निस दिन एही विचार।।७६ ।।

श्री राजजी महाराज के मुखारबिन्द में सब तरह के सागर और सब तरह के सुख अनगिनत बेशुमार हैं। इस सुख को श्री राजजी महाराज की अंगना जानती है, जो रात-दिन उसी में मग्न रहती है।

सब सागर सुख मई, सब सुख पूरन परमान।
अति सोभित मुख सुन्दर, ए जो वाहेदत का सुभान।।७७ ।।

वाहेदत के सुभान श्री राजजी महाराज के मुखारबिन्द की शोभा में सभी सागर सुख से भरपूर हैं, सभी सुख देने वाले हैं।

अंग देखे जेते सूरत के, सो तो सारे इस्क सागर।
गुन हक बाहेर देखावत, इन बातों मोमिन कादर।।७८ ।।

श्री राजजी महाराज के स्वरूप के जितने अंगों को मैंने देखा है, वह सब इश्क से भरे सागर के समान भरपूर दिखाई देते हैं। मोमिन ऐसे समर्थ हैं कि जिन्हें श्री राजजी महाराज अपने बाहिरी सब गुण दिखला देते हैं।

इस्क देखावें चढ़ता, सब कलाओं सुखदाए।
घट बढ़ अर्स में है नहीं, पर इस्कें देत देखाए।।७९ ।।

श्री राजजी महाराज की सब कलाएं सुख देने वाली हैं तथा सभी में नया से नया इश्क दिखाई देता है। परमधाम में घट-बढ़ नहीं होती। यह तो इश्क से ही चढ़ती हुई शोभा बताई है।

केहेना सुनना देखना, अर्स चीज न इस्क बिन।
जो कछू सुख अखंड, सो सब इस्क पूरन।।८० ।।

परमधाम में कहना, सुनना, देखना सभी चीजें इश्क के बिना नहीं हैं। परमधाम में जो कुछ भी है, सुखदायी है, अखण्ड है और इश्क से भरपूर है।

जो कोई अर्स जिमीय में, पसु या जानवर।
सो सरूप सारे इस्क के, एक जरा ना इस्क बिगर।।८१ ।।

परमधाम की जमीन में पशु या जानवर सभी स्वरूप, श्री राजजी महाराज के इश्क से हैं। इश्क के बिना दूसरा और कुछ नहीं है।

दुनी पंखी बिछोहा न सहे, वह आगेही उड़े अरवा।
गिरत है आकास से, होत है पुरजा पुरजा।।८२ ।।

दुनियां का एक पक्षी भी इश्क का वियोग नहीं सहन करता। वह पहले ही आकाश से गिरकर टुकड़े-टुकड़े होकर कुरबानी दे देता है।

Nijanand App

ए पंखी प्रीत दुनीय की, होसी अर्स के कैसे जानवर।
ए निमूना इत ना बने, और बताइए क्यों कर।। ८३ ।।

इस दुनियां के पक्षी की प्रीति ऐसी है तो परमधाम के जानवर कैसे होंगे? यह नमूना भी यहां पर फिट (उपयुक्त) नहीं बैठता तो फिर और कैसे बताएं?

पूर असल जिमी बराबर, और उज्जल जोत प्रकास।
कहूं कम ज्यादा न देखिए, और जोत भरयो अवकास।। ८४ ।।

परमधाम की जमीन में इश्क, जोश, जोत, प्रकाश और उज्ज्वलता सब जगह एक समान भरपूर है। सब जगह आकाश में इनकी किरणें फैली हैं। कहीं भी कम ज्यादा नहीं हैं।

पसु पंखी सब में पूरन, दिल चाह्या पूरन बन।
इन जिमी पसु पंखियों, जिकर करे रोसन।। ८५ ।।

पशु-पक्षियों में, वनों में, सबमें इश्क भरपूर है। वह सर्वदा श्री राजजी का ही जिक्र करते हैं।

और आसिक वाहेदत के, इन हूं बड़ी पेहेचान।
एही खूब खेलौनें हक के, मुख मीठी सुनावें बान।। ८६ ।।

यह पशु-पक्षी रूहों के भी आशिक हैं। इनको रूहों की बड़ी पहचान है। यह श्री राजजी महाराज की खूबी के खिलौने हैं जो अपनी सुन्दर मीठी बोली सुनाते हैं।

खूबी खुसाली पूरन, सुन्दर सोभा चित्रामन।
नैन श्रवन या चोंच मुख, गान करें निस दिन।। ८७ ।।

इन खूब खुशालियों के सुन्दर चित्रकारी के नैन, कान, चोंच या मुख सब इश्क से भरपूर हैं और रात-दिन श्री राजजी का जिक्र करते हैं।

इस्क इनों के क्यों कहूं, जो हक के पिलायल।
कोई केहे न सके इनों बड़ाई, ए अर्स जिमी असल।। ८८ ।।

पशु-पक्षियों के इश्क का कैसे वर्णन करें जो श्री राजजी के इश्क के पीने वाले हैं। इन परमधाम के पशु-पक्षियों की बड़ाई कोई नहीं कह सकता।

सब गुन इनों में पूरन, नरम खूबी खुसबोए।
मुख बानी जोत चित्रामन, ए हकें रिझावें सोए।। ८९ ।।

इन पशु-पक्षियों में सभी गुण, सुगन्धि, खूबी, नरमाई भरी है। इनके चिन्हों की जोत तथा मुख की रसीली वाणी श्री राजजी महाराज को रिझाती है।

हाल चाल सब इस्क की, खान पान सब साज।
सोभा सिनगार सब इस्क के, अर्स इस्क को राज।। ९० ।।

इन पशु-पक्षियों की करनी, रहनी, खान-पान, साज, शोभा, सिनगार सब इश्क के हैं। परमधाम में इस तरह से सारा इश्क का ही राज्य है।

Nijanand App

सोभा क्यों कहूं हक सूरत की, जाको नामै नूरजमाल।
ए दिल आए इस्क आवत, याको सहूरैं बदलें हाल।।९१।।

श्री राजजी महाराज के मुखारबिन्द की शोभा का कैसे वर्णन करूं? वह तो शोभा के सागर हैं और उनका नाम ही नूरजमाल है। इनके दिल में विचार आते ही इश्क आ जाता है। विचार करने मात्र से ही रूहों की हालत बदल जाती है।

हक सूरत अति सोहनी, अति सुन्दर सोभा कमाल।
बैठे हक इस्क छाया मिने, दूजे इस्क लगे दिल झाल।।९२।।

श्री राजजी महाराज का स्वरूप अति मन मोहक है। सुन्दरता तो कमाल की है। सदा इश्क में ही गर्क रहते हैं। दूसरों को तो इश्क की ज्वाला जलाती है।

और कछुए दिल है नहीं, बिना हक वाहेदत।
और जरा कित कहूं नहीं, वाहेदत इस्क निसबत।।९३।।

श्री राजजी महाराज के दिल में अपनी रूहों के अतिरिक्त और कुछ नहीं है। केवल अपनी अंगनाओं के लिए ही इश्क भरा पड़ा है।

जित रहे आग इस्क की, तित देह सुपन रहे क्यों कर।
बिना मोमिन दुनी न छूटहीं, दुनी ज्यों बिन जलचर।।९४।।

जहां इश्क की आग जल रही हो, वहां सपने का तन कैसे रह सकता है? रूहों के बिना दुनियां कोई छोड़ नहीं सकता। जैसे जल के जीव जल के बिना नहीं रहते, वैसे मोमिन इश्क के बिना नहीं रहते।

ब्रह्मसृष्ट घर इस्क में, और दुनियां घर कुफर।
मोमिन जलें न आग इस्कें, दुनी जाए जल बर।।९५।।

मोमिनों का घर इश्क में ही है और दुनियां का घर झूठ में है। मोमिन इश्क की आग में नहीं जलते, जबकि दुनियां खाक हो जाती है।

आग इस्कें जलें ना मोमिन, आसिकों इस्क घर।
इनों लगे जुदागी आग ज्यों, रूहें भागें देख कुफर।।९६।।

मोमिन इश्क की आग में नहीं जलते। इनका इश्क ही घर है। जिसकी जुदाई इन्हें आग की तरह तड़पाती है। संसार को तो देखकर ही छोड़ देते हैं।

रूहें आइयां अर्स अजीम से, दई नुकते इलमें जगाए।
और उमेदां सब छोड़ाए के, हकें आप में लैयां लगाए।।९७।।

रूहें परमधाम से आईं। श्री राजजी की जागृत बुद्धि की तारतम वाणी से इनको जगा दिया है। इनकी सब चाहनाओं को छुड़ाकर श्री राजजी महाराज ने अपने आप में लगा लिया है।

वस्तर भूखन सब इस्क के, इस्क सेज्या सिनगार।
इस्क हक खिलवत, रूहें हादी हक भरतार।।९८।।

श्री राजजी महाराज के सभी वस्त्र, आभूषण, सेज्या, सिनगार सब इश्क के हैं। उनकी खिलवत में रूहें, श्री श्यामाजी, श्री राजजी महाराज इश्क के ही तन हैं।

Nijanand App

जुगल सरूप जब बैठत, इस्क जानें दिल की सब।
इस्क बोल काढ़ें जिन हेत को, उत्तर पावे दूजा दिल तब।। ९९ ।।

श्री राजजी महाराज और श्री श्यामाजी युगल स्वरूप जब सिंहासन पर बैठते हैं तो इश्क उनके दिल की सभी बातों को जानता है। प्यार करके आपस में जब इश्क के वचन बोल देते हैं तो दूसरे को खुशी होती है, उत्तर मिल जाता है।

जुगल सरूप इत बैठत, दोऊ दिल की पावें मोमिन।
एक वचन मुख बोलते, पावें पड़उत्तर आधे सुकन।। १०० ।।

युगल स्वरूप जब मिलकर बैठते हैं तो मोमिन के दिल की बातों को समझ जाते हैं। उनके एक वचन का आधा शब्द बोलने से पहले ही उत्तर मिल जाता है।

इस्क बोले सुनें इस्क, सब इस्कै की बिसात।
जो गुझ दिल मासूक की, सो आसिक से जानी जात।। १०१ ।।

वहां इश्क ही बोलता है, इश्क ही सुनता है और इश्क का ही सब साजो सामान है। श्री राजजी महाराज के दिल में जो गुझ (गुप्त) बातें हैं, वह आशिक रूहें इश्क से ही जान जाती हैं।

मोमिन आसिक हक के, सो हक की जानें दें खबर।
हकें तो किया अर्स अपना, जो थे मोमिन दिल इन पर।। १०२ ।।

मोमिन श्री राजजी महाराज के आशिक हैं। वही श्री राजजी महाराज की हकीकत की पहचान कराते हैं। ऐसे मोमिन श्री राजजी महाराज के दिल के भेद को अर्श में जानते थे, इसलिए इनके दिल को अपना अर्श करके बैठे हैं।

आसिक मासूक दो अंग, दोऊ इस्कें होत एक।
तो आसिक मासूक के दिल को, क्यों ना कहे गुझ विवेक।। १०३ ।।

आशिक रूहें, माशूक श्री राजजी महाराज यह दो अंग हैं, परन्तु इश्क से दोनों एक हैं, इसलिए आशिक रूहें अपने माशूक श्री राजजी महाराज के दिल की छिपी बातें क्यों नहीं बताएं?

तो मोमिनों दिल अपना, जीवते अर्स केहेलाया।
जो इस्क मासूक के दिल का, ऊपर सरूपै देखें पाया।। १०४ ।।

इसलिए मोमिनों का दिल संसार में भी श्री राजजी महाराज का अर्श कहलाया, क्योंकि इन्होंने माशूक श्री राजजी महाराज के दिल के इश्क को ऊपर के सिनगार देखने से ही जान लिया।

जो कछुए चीज अर्स में, सो सूरत सब इस्क।
सो लाड़ लज्जत सुख लेत हैं, सब रूहें हादी हक।। १०५ ।।

परमधाम में जो कुछ भी चीजें हैं सब श्री राजजी महाराज के स्वरूप का इश्क हैं, इसलिए श्री राजश्यामाजी और रूहें बड़े लाड़-प्यार से इश्क की लज्जत लेते हैं।

इस्क सुख अर्स बिना, कहूं पैदा दुनी में नाहें।
तो हकें नाम धराया आसिक, जो इस्क आपके माहें।। १०६ ।।

इश्क के सुख परमधाम के बिना दुनियां में कहीं नहीं हैं, इसलिए श्री राजजी महाराज ने अपना नाम आशिक कहा है, क्योंकि वे इश्क के ही स्वरूप हैं। उनके सिवाय किसी के पास इश्क नहीं है।

Nijanand App

या तो इस्क हादी मिने, जाको हकें कह्या मासूक।
हक का सुकन सुन आसिक, हाए हाए होत नहीं टूक टूक।। १०७ ।।

या फिर इश्क श्री श्यामाजी के अन्दर है, जिनको श्री राजजी ने अपना माशूक कहा है। हाय! हाय! श्री राजजी महाराज के ऐसे वचनों को सुनकर भी यह तन टुकड़े-टुकड़े क्यों नहीं होता?

सुकजीएं भी यों कह्या, प्रेम चौदे भवन में नाहें।
ब्रह्मसृष्ट ब्रह्म निसबती, प्रेम जो है तिन माहें।। १०८ ।।

शुकदेवजी ने भी कहा है कि चौदह लोकों में प्रेम कहीं नहीं है। प्रेम पारब्रह्म की अंगना ब्रह्मसृष्टियों में ही है।

और इस्क माहें रूहन, हकें अर्स कह्यो जाको दिल।
हकें दिल दे रूहों दिल लिया, यों एक हुए हिल मिल।। १०९ ।।

इश्क, रूहों में ही है जिनके दिल को श्री राजजी महाराज ने अपना अर्श कहा है। श्री राजजी महाराज ने अपना दिल रूहों को देकर उनका दिल ले लिया है, इस प्रकार दोनों एकाकार हो गए हैं।

ना तो हक आदमी के दिल को, अर्स कहें क्यों कर।
पर ए आसिक मासूक की वाहेदत, बिना आसिक न कोई कादर।। ११० ।।

वरना श्री राजजी महाराज संसार के आदमी के दिल को अपना अर्श कैसे कह सकते हैं, परन्तु यह तो आशिक माशूक की एकदिली है। बिना श्री राजजी महाराज के दूसरा कोई आशिक कहलाने के योग्य भी नहीं है।

ए जाहेर लिख्या फुरमान में, रूहें उतरी लाहूत से।
अहेल अल्ला तो कहे, जो इस्क है इनों में।। १११ ।।

कुरान में लिखा है रूहें परमधाम से खेल में उतरी हैं। इनके तनों में ही इश्क है, इसलिए इनको खुदा के वारिस कहा है।

इस्क है वाहेदत में, कहूं पाइए न दूजे ठौर।
दूजे ठौर तो पाइए, जो होवे कोई और।। ११२ ।।

इश्क वाहेदत के मोमिनों में ही है। परमधाम के बिना इश्क कहीं नहीं है। संसार तो सारा नाशवान है।

इस्क निसानी हक की, सो पाइए सांच के माहें।
सांच अर्स आगूं वाहेदत के, ए झूठ जरा भी नाहें।। ११३ ।।

श्री राजजी महाराज इश्क के स्वरूप हैं जिनकी पहचान परमधाम में ही मिलती है। परमधाम सदा अखण्ड है। उसके आगे यह झूठा संसार कुछ भी नहीं है।

ए झूठा फरेब कछुए नहीं, जामें आए अहमद मोमिन।
एह निसानी इस्क की, जाके असल अर्स में तन।। ११४ ।।

इस झूठे संसार में, जो कुछ भी नहीं है, श्यामा महारानी और मोमिन खेल देखने आए हैं। श्यामा महारानी और रूहों को ही केवल इश्क के स्वरूप क्यों कहा है? क्योंकि इनकी परआतम परमधाम में है।

Nijanand App

इस्क नाम अर्स से, खेल में ल्याए महंमद।
ए क्या जानें नसल आदम, जो खाकीबुत सब रद।। ११५ ।।

इश्क शब्द को रसूल साहब ही दुनियां में लेकर आए। यह जो आदम की औलाद हैं, सब मिट्टी के पुतले और नष्ट होने वाले हैं, इसलिए यह खुदाई इश्क को क्या जानें?

ए जाने अरवाहें अर्स की, जिनकी इस्क बिलात।
ए क्या जाने पैदा कुंन की, हक आसिक मासूक की बात।। ११६ ।।

इस बात के भेद को परमधाम की रूहें ही जानती हैं, जिनका इश्क सबसे ज्यादा है। दुनियां के पामर (तुच्छ) जीव जो कुंन से पैदा हुए हैं, वे आशिक श्री राजजी महाराज और माशूक श्यामा महारानी और रूहों की बात क्या समझें?

अर्स इस्क हक हादी रूहें, याकी दुनी न जाने कोए।
इस्क अर्स सो जानहीं, जो कायम वतनी होए।। ११७ ।।

परमधाम के इश्क को श्री राजश्यामाजी और रूहें ही जानती हैं। दुनियां नहीं जानती। परमधाम के इश्क के जानने वाले अखण्ड परमधाम के रहने वाले ही हैं।

दुनियां चौदे तबकों, किन निरने करी न सूरत हक।
तिन हक के दिल में पैठ के, करूं जाहेर हक इस्क।। ११८ ।।

चौदह लोकों की दुनियां में श्री राजजी महाराज के स्वरूप का किसी ने भी आज तक निर्णय नहीं किया। अब श्री महामतिजी कहते हैं कि मैं श्री राजजी महाराज के दिल में बैठकर उनके इश्क को जाहिर करती हूं।

तो अर्स हुआ दिल मोमिन, जो जाहेर किया गुझ ए।
हक हादी गुझ मोमिन, कोई और न कादर इनके।। ११९ ।।

श्री राजजी के दिल की छिपी बातों के रहस्य जाहिर करने के कारण ही मोमिनों के दिल को अर्श कहा है। श्री राजश्यामाजी के गुझ रहस्यों के भेद मोमिनों के अतिरिक्त और कोई नहीं कह सकता।

तो पाया खिताब अर्स का, ना तो दिल आदमी अर्स क्यों होए।
ए हक हादी मोमिन बातून, और बूझे जो होवे कोए।। १२० ।।

इसलिए मोमिनों के दिल को अर्श का खिताब मिला। वरना आदमी का दिल अर्श कैसे हो सकता है? श्री राजश्यामाजी और रूहों की खास बातें हैं जिन्हें और कोई नहीं कह सकता।

मुखारबिंद मेहेबूब का, सुख देत हक सूरत।
जुगल किसोर सोभा लिए, दोऊ बैठे एक तखत।। १२१ ।।

श्री राजजी महाराज हमारे लाड़ले सुभान हैं। उनके मुखारबिन्द की शोभा बहुत सुख देती है। खासकर उस समय जब श्री राजश्यामाजी दोनों एक सिंहासन पर विराजमान होते हैं, उनके मुखारबिन्द बहुत सुखदाई होते हैं।

दोऊ सरूप अति उज्जल, कई जोत खूबियों में खूब।
इस्क कला सब पूरन, रस इस्क भरे मेहेबूब।। १२२ ।।

श्री राजश्यामाजी के दोनों स्वरूपों का रंग उज्ज्वल है तथा खूबियों से भरपूर है। इन दोनों के अन्दर इश्क सब कलाओं सहित भरपूर है। ऐसे हमारे मेहबूब के दोनों स्वरूपों का तन इश्क का ही है।

Nijanand App

नैन श्रवन मुख नासिका, चारों अंग गेहेरे गंभीर।
अर्स आकास सिंध तेज का, ताए चारों नेहेरें चलियां चीर।। १२३ ।।

उनके नैन, कान, मुख और नासिका चारों अंग बहुत गंभीरता लिए हैं। इन चारों की चार नहरों के तेज आकाश में जैसे सागर को चीरते हुए जाते हैं।

एक मुख के सुख में कई सुख, और कई सुख माहें नैन।
सुख केते कहूं नैन अंग के, मुख गिनती न आवे बैन।। १२४ ।।

एक मुखारबिन्द की शोभा में ही कई तरह के सुख हैं। इसी तरह से कई तरह के सुख नैनों में हैं। अब नैनों के सुख कैसे वर्णन करूं? इनकी गिनती संसार के मुख के शब्दों में नहीं आती।

श्रवन अन्दर सुख क्यों कहूं, जो सुख सागर आराम।
क्यों निकसे रूह इन से, ए अंग सुख स्यामा स्याम।। १२५ ।।

कान के अन्दर के सुख का कैसे वर्णन करूं जो आराम देने के वास्ते सुख के सागर हैं। यह श्री राजश्यामाजी के सुख देने वाले अंग हैं, जिनको देखकर रूह अलग नहीं हो सकती।

अंग रूह अर्स की नासिका, ए बल जानत रूह को कोए।
चौदे तबक सुन्य फोड़ के, इत लेत अर्स खुसबोए।। १२६ ।।

श्री राजजी महाराज के नासिका के अंग की शक्ति को परमधाम की रूहें ही जानती हैं, जो चौदह तबक शून्य मण्डल को फोड़कर परमधाम की सुगन्धि लेती हैं।

ऐसा बल रूह अर्स के, तो बल हक होसी किन विध।
ए बेवरा जानें पाक मोमिन, जिन हक अर्स दिल सुध।। १२७ ।।

परमधाम की रूहों की जब इतनी शक्ति है, तो परमधाम के श्री राजजी महाराज की शक्ति क्या होगी? इसका विवरण पाक-साफ मोमिन ही जानते हैं, जिनके दिल को हक अर्श कर बैठे हैं तथा जिनकी उन्हें पहचान है।

सुख कहूं मीठी जुबान के, के सुख कहूं लाल अधुर।
के सुख कहूं रस भरे वचन, जो बोलत माहें मधुर।। १२८ ।।

श्री राजजी महाराज की मीठी जबान के, लाल होंठों के सुखों का वर्णन करूं या फिर उनके रस भरे वचनों का जो मीठी आवाज से बोलते हैं, वर्णन करूं।

दोऊ माहों माहें जब बोलहीं, तब मीठे कैसे लगत।
कोई रूह जानें अर्स की, जित हक हुकम जाग्रत।। १२९ ।।

श्री राजश्यामाजी जब आपस में बोलते हैं तो कितने प्यारे लगते हैं। इस सुख को परमधाम की वही रूहें जानती हैं जो श्री राजजी के हुकम से जागृत हो गई हों'

जानों के जोबन चढ़ता, ऐसे नित देखत नौतन।
गुन पख अंग इंद्रियां, बढ़ता नूर रोसन।। १३० ।।

श्री राजजी महाराज के गुण, पक्ष, अंग, इंद्रियां तथा जोबन नित्य नई ही नई शोभा में दिखाई देते हैं तथा उनका नूर भी सब जगह बढ़ता हुआ फैलता है।

Nijanand App

जानों के पल पल चढ़ता, तेज जोत रस रंग।
पूरन सरूप एही देखहीं, इस्क सूरत के संग।। १३१ ।।

श्री राजजी के तेज, जोत, रस और रंग पल-पल चढ़ते हुए दिखाई देते हैं। जो उनके ही इश्क के तन मोमिन हैं, उनके पूर्ण स्वरूप को वह ही देख पाते हैं।

बन्ध बन्ध सब इस्क के, और इस्कै अंगों अंग।
गुन पख सब इस्क के, सोई इस्क बोलें रस रंग।। १३२ ।।

श्री राजजी महाराज के अंग के सभी जोड़ इश्क से भरपूर हैं। उनके गुण, अंग, इंद्रियां और पक्ष सभी इश्क के हैं। बोली की रसना का आनन्द भी इश्क का ही है।

सब इंद्रियां इस्क की, इस्क तत्व रस धात।
पिंड प्रकृत सब इस्क के, इस्क भीगे अंग गात।। १३३ ।।

श्री राजजी महाराज की सभी इंद्रियां, तत्व, रस, धातु, तन तथा स्वभाव इश्क के हैं, अर्थात् उनका पूरा तन इश्क से सराबोर है।

बात विचार सब इस्क के, इस्कै गान इलम।
अंग क्यों कहूं इन जिमिएं, एता भी केहेत हुकम।। १३४ ।।

श्री राजजी महाराज की बातें, विचारधारा, इलम सब इश्क के हैं, इसलिए उन अंगों की शोभा इस संसार में कैसे बताएं? जितना भी बताया है, वह श्री राजजी के हुकम से ही बताया है।

सब चीजें इत इस्क की, इस्कै अर्स बिसात।
रूहें हादी अंग इस्क के, इस्क सूरत हक जात।। १३५ ।।

परमधाम की सब चीजें और सामान इश्क के हैं। यहां तक कि रूहें श्री श्यामाजी के अंग भी इश्क के हैं। परमधाम के सभी पशु, पक्षी, चल और अचल, थिरचर श्री राजजी महाराज के इश्क के ही स्वरूप हैं।

सेहेज सुभाव सब इस्क के, इस्कै की वाहेदत।
हक सरूप सब इस्क के, इस्कै की खिलवत।। १३६ ।।

परमधाम में सभी के स्वभाव, एकदिली इश्क की है। श्री राजजी महाराज के स्वरूप तथा मूल मिलावा सभी इश्क के ही हैं।

मोहोल मन्दिर सब इस्क के, ऊपर तले इस्क।
दसों दिस सब इस्क, इस्क उठक या बैठक।। १३७ ।।

महल, मन्दिर, ऊपर, नीचे, दसों दिशाओं में, परमधाम में उठने-बैठने तक में इश्क ही इश्क दिखाई देता है।

यों अर्स सारा इस्क का, और इस्क रूहों निसबत।
इस्क बिना जरा नहीं, सब हक इस्क न्यामत।। १३८ ।।

इस तरह से पूरा परमधाम इश्क का है। श्री राजजी महाराज की जो रूहें हैं सब इश्क की हैं। श्री राजजी महाराज के इश्क बिना कुछ भी नहीं है। परमधाम में सब कुछ श्री राजजी महाराज के इश्क की ही न्यामत है (स्वरूप है)।

Nijanand App

नेक कही हक इस्क की, पर इस्क बड़ा विस्तार।
इनको बरनन न होवहीं, न आवे माहें सुमार।। १३९ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं कि हमने श्री राजजी महाराज के इश्क की थोड़ी सी बात कही है, परन्तु इश्क का विस्तार बहुत भारी है और बेशुमार है। जिसका वर्णन करना सम्भव नहीं है।

सुनो मोमिनों इस्क की, नेक और भी देऊं खबर।
अर्स आसिक मासूक की, ज्यों औरों भी आवे नजर।। १४० ।।

श्री महामतिजी कहते हैं, हे मोमिनो! सुनो, तुमको थोड़ी सी और इश्क की हकीकत बताऊं जिससे परमधाम के श्री राजश्यामाजी का इश्क दूसरों को भी दिखाई पड़े।

रब्द हुआ इस्क का, हक हादी की खिलवत माहें।
इत कम ज्यादा है नहीं, अर्स इस्क बेवरा नाहें।। १४१ ।।

परमधाम के मूल-मिलावा में श्री राजश्यामाजी और रूहों के बीच इश्क का रब्द (वार्तालाप) हुआ जहां कम ज्यादा होता नहीं है, वहां इश्क का फैसला होता कैसे?

ए बेवरा तित होवहीं, जित बिछोहा होए।
सो तो वाहेदत में है नहीं, होए बिछोहा माहें दोए।। १४२ ।।

इश्क का फैसला वहीं सम्भव है, जहां वियोग हो। वह वियोग परमधाम में नहीं है। वियोग संसार में होता है।

हकें चाह्या करों बेवरा, देखाऊं रूहों को।
इस्क न पाइए बिना जुदागी, सो क्यों होवे वाहेदत मों।। १४३ ।।

श्री राजजी महाराज ने अपने दिल में रूहों को दिखाने के वास्ते इश्क का ब्यौरा करना चाहा, परन्तु इश्क का विवरण बिना जुदाई होता नहीं, इसलिए उसका फैसला परमधाम में कैसे हो?

ताथें दई नेक फरामोसी, रूहों को माहें अर्स।
हांसी करने इस्क की, देखें कौन कम कौन सरस।। १४४ ।।

इसलिए श्री राजजी महाराज ने परमधाम में रूहों को थोड़ी सी फरामोशी दी। ताकि वह देख सकें कि किसका इश्क कम और किसका इश्क ज्यादा है। ताकि रूहों पर इश्क की हंसी कर सकें।

ए झूठा खेल देखाइया, ए जो चौदे तबक।
हम जानें आए खेल बीच में, जित तरफ न पाइए हक।। १४५ ।।

श्री राजजी महाराज ने चौदह लोकों के इस झूठे खेल को इसलिए दिखाया। अब हम जानते हैं कि हम खेल में हैं। यहां पर श्री राजजी महाराज की पहचान तक कराने वाला कोई नहीं है।

इत इस्क कहां पाइए, आग पानी पत्थर पूजत।
ए खेल देख्या एक निमख का, जानों हो गई कई मुद्दत।। १४६ ।।

जहां आग, पानी, पत्थर की पूजा हो वहां श्री राजजी का इश्क कहां मिलेगा? यह तो श्री राजजी महाराज ने एक क्षण में खेल दिखाया, परन्तु लगता है कई मुद्दतें बीत गईं।

Nijanand App

झूठ हम देख्या नहीं, झूठ रहे न हमारी नजर।
पट आड़े खेल देखाइया, सो देने इस्क खबर।। १४७ ।।

हमारी नजर के सामने झूठ टिक नहीं सकता। इससे स्पष्ट है कि हमने झूठा खेल देखा नहीं है। श्री राजजी महाराज ने इश्क की पहचान कराने के वास्ते ही फरामोशी के परदे में खेल दिखाया है।

ऐसा खेल देखाइया, जानें हम आए माहें इन।
इस्क हम में जरा नहीं, सुध हक न आप वतन।। १४८ ।।

श्री राजजी महाराज ने ऐसा खेल दिखाया है कि लगता है हम खेल में आ गए हैं और हमारे अन्दर जरा भी इश्क नहीं है। हमें श्री राजजी महाराज की, अपनी तथा घर की सुध ही नहीं है।

इन इस्कें हमारे ऐसा किया, ए जो झूठे चौदे तबक।
तिन सबों कायम किए, ऐसे हमारे इस्क।। १४९ ।।

हमारे इश्क ने ही चौदह तबक के झूठे जीवों को जन्म-मरण के चक्कर से छुड़ाकर अखण्ड मुक्ति प्रदान कर दी।

जलाए दिए सब इस्कें, हो गई सब अगिन।
एक जरा कोई ना बच्या, बीच आसमान धरन।। १५० ।।

संसार के आसमान, जमीन में जो कुछ भी है, इश्क ने सबको खाक कर दिया और सब संसार अग्नि का रूप हो गया जिससे आसमान जमीन के बीच कुछ नहीं रहा।

हम जानें इस्क न हमपे, हम पर हंससी नूरजमाल।
हमारे इस्कें ब्रह्मांड का, किया जो ऐसा हाल।। १५१ ।।

हम जानते थे कि हमारे पास इश्क नहीं है, इसलिए श्री राजजी महाराज हम पर हंसेंगे, परन्तु हमारे इश्क ने तो ब्रह्माण्ड का स्वरूप ही बदल दिया।

इस वास्ते खेल देखाइया, वास्ते बेवरे इस्क के।
कोई आया न गया हममें, बैठे अर्स में देखें ए।। १५२ ।।

श्री राजजी महाराज ने इश्क के विवरण के वास्ते ही खेल दिखाया, जो हम परमधाम में ही बैठकर देख रहे हैं। वैसे हममें से कोई यहां न आया है, न गया है।

कहे महामत हुकमें देखाइया, ऐसी कर हिकमत।
हम देख्या इस्क बेवरा, बैठे बीच खिलवत।। १५३ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं कि श्री राजजी महाराज के हुकम ने बड़ी हिकमत करके खेल दिखाया। जिसमें हमने मूल-मिलावा में बैठकर ही खेल देखकर इश्क का नतीजा पा लिया।

॥ प्रकरण ॥ २० ॥ चौपाई ॥ १२१७ ॥

Nijanand App